E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2024; 6(11): 122-126
Received: 24-09-2024
Accepted: 29-10-2024

Dr. Anand Kumar
Associate Professor,
Department of Sanskrit,
Deshbandhu College
(University of Delhi)
Kalkaji, New Delhi, India

Bikram Badyakar
Research Scholar, Department
of Sanskrit, University of
Delhi, New Delhi, India

Corresponding Author:
Dr. Anand Kumar
Associate Professor,
Department of Sanskrit,
Deshbandhu College
(University of Delhi)
Kalkaji, New Delhi, India

वात्स्यायन-पूर्ववर्तिनी कामशास्त्रीय परम्परा

Anand Kumar and Bikram Badyakar

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2024.v6.i11b.1727

सारांश

भारतीय परम्परा में जब भी कामशास्त्र की चर्चा होती है, तो स्वाभाविकरूप से सर्वप्रथम महर्षि वात्स्यायन प्रणीत कामसूत्र का स्मरण होता है। लिखित रूप में कामशास्त्र की परम्परा के आद्याचार्य महर्षि वात्स्यायन ही माने जाते हैं। उनके पश्चात् जितने भी कामशास्त्रीय ग्रंथ लिखे गए, उनमें कामसूत्र का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। यद्यपि वात्स्यायन से पूर्व भी भारतीय संस्कृति में कामशास्त्र की एक सुदीर्घ परम्परा विद्यमान थी, जिसका उल्लेख स्वयं वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ में किया है। उन्होंने पूर्ववर्ती आचार्यों के कार्यों का संकलन एवं संशोधन कर कामसूत्र की रचना की। कुछ आधुनिक कामशास्त्रीय विद्वानों ने वात्स्यायन द्वारा उल्लिखित परंपरा से भिन्न एक और परंपरा का उल्लेख किया है, जिसमें कुछ अन्य ग्रंथों का उल्लेख मिलता है। इनमें से दो-तीन प्रमुख ग्रंथ विशेष रूप से सामने आए हैं। इस शोधपत्र में कामशास्त्र की प्राचीन परंपरा, वात्स्यायन से पूर्व के आचार्य तथा आधुनिक विद्वानों द्वारा प्रस्तावित वैकल्पिक परंपरा का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, इस सम्बन्ध में कुछ आधुनिक कामशास्त्रीय गवेषकों द्वारा प्रतिपादित धारणाओं का तर्कसंगत खंडन भी प्रस्तुत किया जाएगा।

कूटशब्द: काम, कामशास्त्र, परम्परा, पूर्ववर्ती परम्परा, वात्स्यायन, आधुनिक कामशास्त्रीय विद्वान् तथा शोधकर्ता

प्रस्तावना

"कामो जज्ञे प्रथमो नैनं देवा आपु: पितरो न मर्त्याः।
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि।।"[1]

'काम सबसे प्रथम उत्पन्न हुआ। देवों, पितरों और मर्त्यों को भी यह प्राप्त नहीं हुआ। अतः तू श्रेष्ठ है और सदा महान् है। हे काम! उस तुझे में नमस्कार करता हूँ।'[2]

हमारा देश भारत किसी समय 'जगद्गुरु' नाम से सम्बोधित किया जाता था। 'जगद्गुरु' का शाब्दिक अर्थ है– संपूर्ण विश्व को ज्ञान प्रदान करने वाला-

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशदग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवाः।।"[3]

इसप्रकार हमारा देश भारत सदैव ज्ञानार्जन के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। भारत द्वारा इतनी अधिक ऊँचाई प्राप्त करने का कारण यह है कि इसके द्वारा प्रतिपादित सभी सिद्धान्त व्यावहारिक जीवन में खरे उतरे हैं और उसके द्वारा मानव को सुखुद जीवन में सभी सहायता मिली है।

भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने मानव के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थ निर्धारित किये थे- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। धर्म से मानव-आचरण को नियन्त्रित करने की शिक्षा प्राप्त होती है। साथ ही समृद्धि और मानसिक शान्ति की प्राप्ति में इसका विशेष योगदान है और मोक्ष तो सर्वथा पारलौकिक लाभ (जीवात्मा की मुक्ति) के लिए है। लेकिन अर्थ और काम ऐसे हैं - जिनके सेवन से तत्काल और प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला लाभ होता है। इसलिए इन दोनों के प्रति व्यक्ति का विशेष रूप से आकर्षित होना स्वाभाविक ही है। और काम के लिए कोई शास्त्र लिखना - यह भी भारतवर्ष में ही सर्वप्रथम हुआ था । ऋषि वात्स्यायन ने काम को मनुष्य जीवन में मर्यादित करने के लिए ही कामसूत्र ग्रन्थ की रचना की-

[1] अथर्ववेद - 9/2/19
[2] प्रो. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर [अनुवादक]
[3] मनुस्मृति 2/20

"तदेतद् ब्रह्मचर्येण परेण च समाधिना।
विहितं लोकयात्राऽर्थं न रागार्थोऽस्य संविधिः।।"[4]

अर्थात् इस कामसूत्र की रचना अमोघ ब्रह्मचर्य और निर्विकल्प समाधि के द्वारा वात्स्यायन ने लोक-व्यवहार को सुचारु, सफल, बनाने के लिए की है। इसका प्रयोजन और विधान रति-राग नहीं है।
इस कामसूत्र तथा कामशास्त्र के तत्त्वज्ञ धर्म, अर्थ और काम की स्थिति एवं अपनी सांसारिक स्थिति की रक्षा करते हुए जितेन्द्रिय हो जाते हैं –

"रक्षन्धर्मार्थकामानां स्थितिं स्वां लोकवर्तिनीम्।
अस्य शास्त्रस्य तत्त्वज्ञो भवत्येव जितेन्द्रियः।।"[5]

महाभारत में कहा गया है –

"धर्मार्थकामाः सममेव सेव्या यो ह्येकसक्तः स नरो जघन्यः।"

तीनों का समान रूप से सेवन करने का विधान इस श्लोक में दिया गया है। और जो मनुष्य एक में, चाहे वह धर्म ही क्यों न हो - आसक्त हो जाता है, वह मनुष्य जघन्य अर्थात् निकृष्ट है।
गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है –

"धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।।"[6]

अर्थात् प्राणियों में मैं ही धर्म से अविरोध अर्थात् धर्मयुक्त काम हूँ। अर्थात् मर्यादित काम सेवन का उपदेश हमारे शास्त्र में अनुकूल ही है।
आचार्य वात्स्यायन ने काम के दो स्वरूप स्वीकार करके उसके लक्षण भी दिये हैं-

१. सामान्य काम: सामान्य काम के लक्षण में वात्स्यायन ने कहा है

"श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणानामात्मसंयुक्तेन मनसाधिष्ठितानां स्वेषु स्वेषु विषयेष्वानुकुल्यतः प्रवृत्तिः कामः।"[7]

अर्थात् आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित श्रोत्र, त्वच्, चक्षु, जिह्वा और घ्राण इन्द्रिय की अपने-अपने विषयों में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति को काम कहते हैं।[8]

२. विशेष काम: इसके लक्षण में वात्स्यायन ने कहा है –

"स्पर्शविशेषविषयात्त्वस्याभिमानिकसुखानुविद्धा
फलवत्यर्थप्रतीतिः प्राधान्यात्कामः।"[9]

अर्थात् चुम्बन आदि प्रासंगिक सुख के साथ परस्पर स्तन, नितम्ब आदि विशेष अङ्ग के स्पर्श से आनन्द की जो फलवती प्रतीति होती है, उसे काम कहते है।[10]
इस सूत्र में 'फलवती अर्थप्रतीतेः' इस शब्द में गंभीर भाव निहित है। यशोधर ने इस शब्द का भाव चुंबन, आलिंगन से लेकर वीर्यक्षरण पर्यन्त आनन्द होना लिखा है। किंतु हमें वात्स्यायन की दृष्टि यशोधर से भिन्न प्रतीत होती है। यहाँ पर आचार्य का मुख्य उद्देश्य सुयोग्य संतान-उत्पत्ति समझना उचित होगा।[11]

इस काम पुरुषार्थ के तीन रूप स्वीकार कर सकते हैं -
1. सर्जनशक्तिरूप काम
2. रिपुस्वरूप काम
3. देवस्वरूप काम।

१. सर्जनशक्तिरूप काम: वेद, उपनिषद् इत्यादि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में काम को सृष्टि का आधार या सर्जन शक्ति के रूप में माना गया है। इस संसार की उत्पत्ति के पूर्व, परमपिता परमेश्वर के मन में सर्वप्रथम काम उत्पन्न हुआ, वही वस्तुतः इस दृश्यमान जगत का पहला बीजरूप कारण था-

"कामस्तदग्रे समवर्ततााधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।"[12]

काम ही सृष्टि का आदि कारण है और काम से ही सृष्टि -परम्परा आगे बढ़ती है। नृत्य, संगीत, चित्र आदि ६४ कलाओं का सृजन भी इस काम से ही होता है। कालिका पुराण का कला-उत्पत्तिविषयक आख्यान तथा कामसूत्र इस विषय में प्रमाण है।

२. रिपुस्वरूप काम: षड्रिपुओं में काम की गणना की गई है। काम जब अधर्म से युक्त होता है तो वह काम रिपु बन जाता है। गीता में भी कहा गया है –

"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।।"[13]

अर्थात् रजोगुण में उत्पन्न यह 'काम' है, यही क्रोध है; यह महाशना (जिसकी भूख बड़ी हो) और महापापी है, इसे ही तुम यहाँ (इस जगत् में) शत्रु जानो।

३. देवस्वरूप काम: वेद, पुराण, रामायण, महाभारत एवं काव्य में काम को देवता के रूप में ही स्वीकार किया गया है। कामदेव के विभिन्न नाम हैं। यथा - पंचसायक, मदन, मन्मथ, कन्दर्प, अनंग आदि। इनके पाँचों बाणों की चर्चा काव्य में प्रायशः देखी जाती है।

पर्यालोचना: परम्परा का अर्थ है किसी समाज, संस्कृति या परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही मान्यताएँ, विचार, आचार, रीति-रिवाज और विधियाँ। यह किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय की विशिष्ट पहचान होती है और समय के साथ विकसित एवं परिष्कृत होती रहती है। यह परम्परा ही पीढ़ियों के बीच संस्कृति एवं ज्ञान का हस्तांतरण करती है। साहित्य-शास्त्र की परम्परा में भी ऐसा ही ज्ञान विकसित होकर हस्तांतरित होता है।

वात्स्यायन-निर्दिष्ट पूर्ववर्तिनी परम्परा: इसका विवरण कामसूत्र में प्राप्त होता है। प्रजापति ब्रह्मा ने मानवजीवन को नियमित व्यवस्थित बनाने के लिए शतसहस्र/एकलाख अध्यायों वाला एक संविधान प्रस्तुत किया, जिसमें त्रिवर्ग की विवेचना की गई थी।[14] उस विशाल संविधान से धर्मशास्त्र विषयक भाग को अलग करके आचार्य मनु ने मनुसंहिता की रचना की।[15] उसी मनुस्मृति का संक्षिप्त रूप आज प्रचलित और व्यवहृत है। उस विशाल संविधान से अर्थशास्त्र विषयक भाग को अलग करके आचार्य वृहस्पति ने वार्हस्पत्यम् अर्थशास्त्र की रचना की।[16] अनन्तर महादेव जी के अनुचर नन्दी ने उस संविधान ग्रंथ से कामविषयक भाग को अलग करके एक हजार अध्यायों का कामशास्त्र सम्पादित किया।[17]उसी

[4] कामसूत्र- 7/2/55
[5] तदेव -7/2/56
[6] बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।।7.11।।
[7] कामसूत्र 1/2/11
[8] माधवाचार्य - अनुवादक
[9] कामसूत्र 1/2/12
[10] रामानन्द शर्मा अनुवादक
[11] देवदत्त शास्त्री, कामसूत्रम् (वात्स्यायनमुनिप्रणीत)
[12] ऋग्वेद 10/129/4
[13] गीता 3/37
[14] कामसूत्र 1/1/5
[15] तदेव- 1/1/6
[16] तदेव- 1/1/7
[17] तदेव- 1/1/8

संस्करण से श्वेतकेतु ने पाँच सौ अधायों का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार किया।[18] इसके बाद पाञ्चालदेश के बाभ्रव्य ऋषि ने श्वेतकेतु द्वारा सम्पादित संस्करण को संक्षिप्त कर 150 अध्यायों का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार किया जिसमें सात अधिकरण थे- साधारण, सांप्रयोगिक, कन्यासम्प्रयुक्तक, भार्याधिकारिक, पारदारिक, वैशिक एवं औपनिषदिक।[19]

पाटलिपुत्र की गणिकाओं द्वारा अनुरोध किए जाने पर आचार्य दत्तक ने बाभ्रव्य द्वारा संक्षिप्त किए गये कामशास्त्र के छठे भाग वैशिक नामक अधिकरण को पृथक किया।[20] इसी प्रसंग से आचार्य चरायण ने साधारण नामक अधिकरण का पृथक् प्रवचन किया। आचार्य सुवर्णनाभ ने सांप्रयोगिक नाम के अधिकरण को पृथक् किया। आचार्य घोटकमुख ने कन्यासम्प्रयुक्तक नाम के अधिकरण को पृथक् किया। गोनर्ददेश के निवासी आचार्य गोनर्दीय ने भार्याधिकारिक नाम के अधिकरण को पृथक् किया। गोणिकापुत्र ने पारदारिक नाम के अधिकरण को पृथक् किया तथा आचार्य कुचुमार ने औपनिषदिक नामक अधिकरण को पृथक् किया।[21]

बाभ्रव्य द्वारा सम्पादित कामशास्त्र अतिशय विस्तृत और विशाल होने के कारण सर्वसाधारण के लिए उपोयोगी नहीं था और आचार्य दत्तक से लेकर कुचुमार तक के आचार्यों ने कामशास्त्र के एक-एक अंश मात्र का ही संक्षेपीकरण एवं संपादन किया था जिससे सम्पूर्ण कामशास्त्र के विषय का सर्वांगीण अध्ययन न किया जाकर आंशिक ही अध्ययन किया जाता था। इस अभाव और सर्वांगशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता का अनुभव कर आचार्य वात्स्यायन ने कामसूत्र की रचना की।[22]

आधुनिक विद्वान् तथा शोधकर्ताओं की दृष्टि से पूर्ववर्तिनी ग्रन्थ/आचार्य परम्परा

डॉ. दलवीर सिंह चौहान, डॉ. संकर्षण त्रिपाठी, डॉ.राघवेंद्र मिश्र आदि प्रमुख कामशास्त्रीय विद्वानों ने कामसूत्र के पूर्व लिखे गए ऐसे छः ग्रंथों का उल्लेख किया है जिनमें से चार/ पाँच ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध भी हैं।

१.पौरुरवसमनसिजसूत्र: इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम संपादित रूप 'कामकुंजलता'[23] में प्राप्त होता है। 'कामकुंजलता' का सम्पादन 1967 में प्रो.ढूँढीराज शास्त्री ने किया था। पौरुरवसमनसिजसूत्र में सम्पूर्ण 53 सूत्र हैं। इस ग्रन्थ के प्रणेता महाराज पुरुरवा हैं, इनका समय ऋग्वेदकालीन बताया जाता है। क्योंकि पुरुरवा वेदोक्त राजर्षि हैं और ऋग्वेद में पुरुरवा- उर्वशी संवाद सूक्त भी प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ में परमानन्द, ब्रह्मानन्द, इन्द्रानन्द, अवांगमनसगोचरानन्द एवं चिदाभासानन्द शब्दों का प्रयोग सम्प्रयोग (मैथुन) से प्राप्त आनन्द के लिए किया गया है।

२. कादम्बरीस्वीकरणसूत्र: इस ग्रंथ के रचनाकार राजर्षि पुरुरवा माने जाते हैं, जिन्होंने पौरुरवसमनसिजसूत्र ग्रन्थ की रचना की थी। दोनों ग्रंथों की रचना-शैली सूत्रात्मक है। ये दोनों ग्रंथ वात्स्यायन और पतञ्जलि से बहुत पूर्व के हैं। यह ग्रन्थ भी लघुकाय है, इस ग्रन्थ में केवल तैंतीस सूत्र हैं। इसमें मदिरापान का उल्लेख अत्यंत शृंगारिक है और बताया गया है कि मदिरा कितने प्रकार की होती है, कैसे बनती है, क्यों, कब और कैसे मदिरापान करना चाहिए? अतः यह मदिरा प्रधान ग्रन्थ है।

३. कादम्बरीस्वीकरणसूत्रकारिका: कुछ कामशास्त्रीय विद्वानों का मानना है कि यह कामशास्त्रीय ग्रंथ भरतमुनि द्वारा रचित है। क्योंकि नाट्यशास्त्र और इस ग्रन्थ की भाषा शैली एक समान है। 'कामकुंजलता' में इस ग्रंथ का रचनाकार भरत मुनि को ही बताया गया है। भरत का समय लगभग दो हजार ई.पू माना जाता है। वात्स्यायन का समय ई.पू प्रथम शताब्दी के उत्तरार्ध से प्रथम शताब्दी के मध्य माना जाता है।[24] अतः कादम्बरीस्वीकरणसूत्रकारिका वात्स्यायन के पूर्व लिखा गया है। इसमें कादम्बरीस्वीकरणसूत्र की ही भाँति मदिराओं का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। इसमें 132 कारिकाएँ हैं।

४. बाभ्रव्यकारिका: बाभ्रव्य मुनि विरचित इस पद्यात्मक कामशास्त्रीय ग्रन्थ में 146 श्लोक हैं। पूर्व में यह ग्रन्थ बहुत ही विशाल था (500 अध्ययायुक्त) जिसका उल्लेख वात्स्यायन ने कामसूत्र में किया है। परंतु शनैः-शनैः इसकी पांडुलिपियाँ लुप्त हो गईं और अब इतना ही भाग प्राप्त होता है। यह भी हो सकता है कि बाभ्रव्यमुनि 500 अध्ययायुक्त कामशास्त्र के अलावा यह बाभ्रव्यकारिका लिखी हो। बाभ्रव्य ऋषि का प्रभाव कामसूत्र में दिखाई देता है। ऋषि वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ में बाभ्रव्य-मत का उल्लेख किया है और अन्त में कहा-

"बाभ्रव्य के सूत्रों का अर्थ तथा कामशास्त्र का विचार करके महर्षि वात्स्यायन ने इस कामसूत्र को आर्षविधिके साथ बनाया है।"[25]

५. कामतंत्र: आचार्य कर्णीसुत मूलदेव ने कामतंत्र की रचना की है। आचार्य मूलदेव संभवतः ई.पू चतुर्थ शताब्दी से ई.पू छठी शताब्दी के मध्य संभवतः हुए होंगे। इनका उल्लेख कोक्कोक अपने ग्रन्थ रतिरहस्य में करते हैं। रतिरहस्यकार ने उत्कल देश की रमणियों को संतुष्टि प्रदान करने वाले विविध उपचारों के वर्णन के प्रसंग में आचार्य मूलदेव के मत का उल्लेख किया है।[26] महाकवि बाणभट्ट ने कादम्बरी में विन्ध्याचल के वर्णन के समय कर्णीसुत की प्रसिद्धि का उल्लेख किया है। आचार्य मूलदेव कामशास्त्र, कलाशास्त्र एवं चौर्यशास्त्र आदि के बहुमान्य आचार्य थे। यह 'कामतंत्र' उपलब्ध है या नहीं इस विषय में आधुनिक कामशास्त्रीय विद्वान् मौन हैं। 'कामतंत्रकाव्य' नामक ग्रंथ कामकुंजलता में प्राप्त होता है। परन्तु उसके ग्रंथकार के बारे में कुछ नहीं बताया गया है।

६. स्मरशास्त्र: कश्मीर के राजा वसुनन्द ने स्मरशास्त्र नामक कामशास्त्रीय ग्रन्थ की रचना की है। महाकवि कल्हण द्वारा विरचित राजतरंगिणी में प्राप्त विवरण अनुसार क्षितिनन्द के पुत्र वसुनन्द ने कामशास्त्र से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा था। यह ग्रंथ अब उपलब्ध नहीं है, केवल विवरण प्राप्त होता है।इसके अतिरिक्त, इस ग्रन्थ और ग्रन्थकार के विषय में कोई अन्य विवरण प्राप्त नहीं होता।

डॉ. संकर्षण त्रिपाठी ने 'कामसूत्रकालीन समाज एवं संस्कृति' ग्रन्थ में केवल दो ग्रंथों - कामतंत्र एवं स्मरशास्त्र का उल्लेख किया है। डॉ. राघवेंद्र ने अपने शोधप्रबंध में उपरि उक्त छः ग्रंथों को ही वात्स्यायन के पूर्ववर्ती ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया है। इसमें उनकी सूक्ष्म शोधदृष्टि की प्रशंसा करनी होगी। पर जहाँ तक प्रतीत होता है कि उनके इस मत का आधार संभवतः डॉ. दलवीर सिंह चौहान हैं। आधुनिक विद्वान् तथा शोधकर्ताओं की दृष्टि से पूर्ववर्तिनी परम्परा के अन्तर्गत उपलब्ध चार ग्रंथों का सर्वप्रथम सम्पादन तथा हिन्दी अनुवाद डॉ. चौहान ने ही किया है। उन-उन ग्रंथों की भूमिका या प्रस्तावना में रचनाकार, रचनाकाल आदि विषयों पर भी चर्चा की है। और डॉ. राघवेंद्र जी का शोधप्रबंध डॉ.चौहान द्वारा सम्पादित ग्रंथों से परवर्ती है।

आधुनिक दृष्टि में की गई पूर्ववर्तिनी कामशास्त्रीय परम्परा का खण्डन

डॉ. राघवेंद्र शास्त्री ने अपने शोधप्रबंध में आधुनिक दृष्टि में पूर्ववर्तिनी कामशास्त्रीय परम्परा का उल्लेख किया है, जिसमें छः ग्रंथों का परिचय उन्होंने कराया है। 'कामतंत्र' ग्रन्थ के रचयिता आचार्य मूलदेव माने जाते हैं, जिनका समय ईसा-पूर्व चतुर्थ से ईसा-पूर्व षष्ठ शताब्दी के मध्य का अनुमानित है। अतः इसमें संदेह नहीं कि यह ग्रन्थ 'कामसूत्र' से पूर्व रचित है। इसी प्रकार 'स्मरशास्त्र' ग्रन्थ को भी पूर्ववर्ती माना गया है। ये दोनों ही ग्रन्थ वर्तमान समय में अनुपलब्ध हैं। डॉ.

[18] तदेव- 1/1/9
[19] तदेव- 1/1/10
[20] तदेव 1/1/11
[21] तदेव 1/1/12
[22] तदेव 1/1/14
[23] यह एक संकलनात्मक ग्रन्थ है, जिसमें 12 दुर्लभ कामशास्त्रीय ग्रन्थ हैं।
[24] डॉ संकर्षण त्रिपाठी
[25] कामसूत्र 7/2/54
[26] रतिरहस्य4/21

संकर्षण त्रिपाठी ने इन दोनों ग्रन्थों को वात्स्यायन के पूर्ववर्ती माना है। इसी प्रकार, डॉ. राघवेन्द्र मिश्र ने भी अपने शोध-प्रबन्ध में इन दोनों को 'कामसूत्र' के पूर्ववर्ती ग्रन्थों के रूप में स्वीकार किया है।

पौरुवसमनसिजसूत्र और कादम्बरीस्वीकरणसूत्र ग्रन्थ के रचयिता वेदकालीन महर्षि पुरूरवा हैं। ये दोनों ग्रन्थ भी वात्स्यायन के पूर्ववर्ती ही हैं, क्योंकि पुरुरवा के द्वारा रचित इन ग्रंथों में अञ्जि, उदञ्जि, सर्दगृदि आदि जैसे दुरुह-दुर्बोध शब्दों का प्रयोग है; जिनकी शब्द कोष में अनुपलब्धि इन ग्रंथों की प्राचीनता को सिद्ध करती है।

बाभ्रव्यकारिका, ऋषि बाभ्रव्य विरचित है और आचार्य बाभ्रव्य वात्स्यायन के पूर्ववर्ती ही हैं – यह बात महर्षि वात्स्यायन ने भी कामसूत्र में बताया है। परन्तु वर्तमान में उपलब्ध बाभ्रव्यकारिका न तो कामसूत्र में उल्लिखित तथ्यों के अनुसार विस्तृत है और न ही यह कामसूत्र से अधिक तथ्यात्मक समृद्ध है। अधुना लब्ध इस ग्रन्थ केवल 146 कारिकाएँ हैं और सात अधिकरण है। परन्तु ऋषि वात्स्यायन के द्वारा प्रदत्त तथ्य के आधार पर, बाभ्रव्य ऋषि के द्वारा संपादित कामशास्त्र में 150 अध्याय हैं और सात अधिकरण थें। इससे अतिरिक्त, वर्तमान समय में प्राप्त बाभ्रव्यकारिका को पढ़ने से प्रतीत होता है कि इसपर वात्स्यायन प्रणीत कामसूत्र का ही शब्दशः प्रभाव है। इस बाभ्रव्यकारिका के साम्प्रयोगिक अधिकरण के चुम्बन प्रकरण में एक ही श्लोक है। वह श्लोक और कामसूत्र के साम्प्रयोगिक के चुम्बनविकल्प प्रकरण के अन्त का श्लोक शब्दशः एक ही है —

"कृते प्रतिकृते कुर्यात्ताडिते प्रतिताडितम्।
करणेन च तेनैव च चुम्बिते प्रतिचुम्बितम्।।"

इसीप्रकार *बाभ्रव्यकारिका* की प्रायः समस्त कारिकाएँ *कामसूत्र* के श्लोकों से शब्दतः समान हैं। परन्तु बाभ्रव्यकारिका के टीकाकार आचार्य कामराज ने तो इस ग्रंथ के ग्रंथकार बाभ्रव्य ऋषि को ही माना है। परन्तु हमें ऐसा नहीं लगता है। श्लोकों की शब्दशः समानता के आधार पर तो यही कहा जा सकता है कि या तो किसी व्यक्ति अथवा स्वयं टीकाकार आचार्य कामराज ने वात्स्यायन के कामसूत्र से श्लोकों को चुन-चुन कर ग्रहण कर पाण्डुलिपि तैयार कर दी हो और स्वयं को बाभ्रव्य मुनि से जोड़कर प्रतिष्ठा पाने के लिए उनके टीकाकार के रूप में स्वयं को घोषित कर दिया हो। ऐसी सम्भावना ही प्रवल है। लेकिन यह बात भी सच है कि बाभ्रव्य ऋषि वात्स्यायन के पूर्ववर्ती है। और कामसूत्र में बाभ्रव्य ऋषि का प्रबल प्रभाव है। वात्स्यायन ने स्वयं कहा है कि –

"बाभ्रवीय सूत्रों के अर्थ एवं कामशास्त्र का भलीभाँति अनुशीलन करके इस कामसूत्र को वात्स्यायन ने शास्त्रीय विधि से लिखा है।"

यद्यपि वर्तमान में उपलब्ध बाभ्रव्यकारिका को कामसूत्र के पूर्ववर्ती माना गया है— विशेषतः डॉ. चौहान एवं डॉ. राघवेन्द्र मिश्र जैसे विद्वानों द्वारा, तथापि उपलब्ध पाठ-सामग्री एवं श्लोकगत समानताओं के आधार पर ऐसा प्रतीत नहीं होता। हमारे मतानुसार, बाभ्रव्यकारिका की वर्तमान पाठ-परंपरा *कामसूत्र* से ही प्रभावित है। साथ ही, इस ग्रन्थ की शैली सरल एवं नवीनता से परिपूर्ण प्रतीत होती है। इसलिए इस ग्रन्थ को कामसूत्र के पूर्ववर्ती तो माना नहीं जा सकता है।

कादम्बरीस्वीकरणसूत्रकारिका ग्रन्थ राजर्षि भरत ने लिखा है। अब 'भरत' नाम से संस्कृत साहित्य में चार-पाँच व्यक्तित्व हैं। किस भरत ने इसे लिखा निश्चित रूप से कहना कठिन है। लेकिन हाँ, यह नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि विरचित बिल्कुल भी नहीं है और यह ग्रन्थ वात्स्यायन से पूर्ववर्ती भी बिल्कुल नहीं है। लेकिन डॉ. राघवेंद्र शास्त्री ने इसे पूर्ववर्ती माना है। कुछ विशेष कारण से ध्यान न देने कारण शायद उनसे यह बात छूट गई हो। संभवतः उन्होंने भरतमुनि को ही इस ग्रंथ के रचनाकार के रूप में माना है। और भरतमुनि वात्स्यायन से पूर्ववर्ती ही हैं। इसलिए उन्होंने इस ग्रंथ को कामसूत्र के पूर्वकालीन रचना के रूप में प्रस्तुत किया है। लेकिन यह ग्रन्थ वात्स्यायन के परवर्ती ही प्रतीत होता है। इसका प्रमाण कादम्बरीस्वीकरणसूत्रकारिका में ही मिलता है। इस ग्रन्थ के 126 वीं कारिका में कहा गया है कि 'जिस पुरुष को कादम्बर (मदिरा) का ज्ञान नहीं है, वह उर्वशी अप्सरा के लोक में पहुँच कर उर्वशी के पास से क्षण में नीचे गिरा दिया जाता है। इसीलिए वात्स्यायन कामसूत्र के अध्ययन की आवश्यकता को समझते हुए उसकी पूर्ति हेतु इस शास्त्र को प्रकाशित किया गया है'[27] —

"उर्वश्याधिष्ठिताल्लोकात्प्रच्युतो भवति क्षणात्।
वात्स्यायनपरिज्ञानमावश्यकतया स्मृतम्।"[28]

आशय यह है कि मद्यपान से संबंधित कोई विषय कामसूत्र में प्रमुखता से वर्णित नहीं है। उस शून्यता की पूर्ति के लिए इस ग्रंथ को प्रकाशित किया जा रहा है। इससे तो सरलता से समझ में आता है कि यह ग्रंथ कामसूत्र के बाद का है। इसके बावजूद डॉ. राघवेन्द्र मिश्र ने इसे *कामसूत्र* से प्राचीन मानते हुए पूर्ववर्ती ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया है, जो हमारे मत में तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता।

उपसंहार

परम्परा अर्थात् निरन्तर प्रवहमान क्रम — एक ऐसी अविच्छिन्न श्रृंखला है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकसित होती है। कामशास्त्र-परम्परा का मूल बीज स्वयं ब्रह्मा से अंकुरित हुआ; वही बीज महर्षि वात्स्यायन के अद्वितीय पांडित्य से पोषित होकर विशाल महीरूह का रूप ले लेता है। वात्स्यायन-प्रणीत कामसूत्र न केवल इस वृक्ष का प्रौढ़ तना है, बल्कि परवर्ती सभी कामशास्त्रों के लिए दिग्दर्शक माइल-स्टोन भी है — एक ऐसा मानक स्तम्भ, जिसकी छाया में उत्तरवर्ती कृतियाँ पल्लवित-पुष्पित होती रहीं। ब्रह्मा से प्रारम्भ हुई कामशास्त्रीय चेतना, वात्स्यायन के माध्यम से जिस वृहत स्वरूप में विकसित हुई, वह भारतीय कामदर्शन की एक अविच्छिन्न और केन्द्रीय धारा के रूप में स्वीकार की जाती है। परम्परा का ज्ञान रचना की गहन समझ, सम्यक् आलोचनात्मक मूल्यांकन और सृजनात्मक निरन्तरता—तीनों के लिए अनिवार्य है। आधुनिक शोधकर्ताओं ने भी जो वात्स्यायन की पूर्ववर्तिनी परंपरा का उल्लेख किया है और वह भी शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वात्स्यायन ने भले ही इस परंपरा में प्राप्त ग्रंथों या ग्रंथकारों का उल्लेख कामसूत्र में नहीं किया फिर भी इसका अस्तित्व था ये आधुनिक शोधकर्ता के शोध से स्पष्ट होता है।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. माधवाचार्य (व्याख्याकार). कामसूत्र (वात्स्यायनमुनिप्रणीतम). बम्बई: खेमराज- श्रीकृष्णदास-प्रकाशन, संवत् २०७८.
2. शास्त्री, श्रीदेवदत्त (व्याख्याकार). कामसूत्रम् (वात्स्यायनमुनिप्रणीत). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 2019.
3. गैरोला, वाचस्पति. कामसूत्र परिशीलन. दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, [पुनर्मुद्रित संस्करण] 2023.
4. द्विवेदी, डॉ. पारसनाथ (व्याख्याकार). कामसूत्र (वात्स्यायनमुनिप्रणीत). वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2020.
5. शर्मा, डॉ. रामानन्द(अनुवाद). कामसूत्र (वात्स्यायनमुनिप्रणीत). वाराणसी: कृष्णदास अकादमी, 2001.
6. त्रिपाठी, डॉ. संकर्षण. कामसूत्रकालीन समाज एवं संस्कृति. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन,2008.
7. शास्त्री, ढूँढीराज (सम्पादक). कामकुंजलता. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, 1967.
8. चौहान, डॉ. दलवीर सिंह (सम्पादक एवं व्याख्याकार). पौरुवमनसिजसूत्रम्. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, [द्वितीय संस्करण] 2014.
9. चौहान, डॉ. दलवीर सिंह (सम्पादक एवं व्याख्याकार). कादम्बरीस्वीकरणसूत्रम् [राजर्षिपुरुरवाप्रणीत]. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, [तृतीय संस्करण] 2016.

[27] अनुवादक - डॉ. दलवीर सिंह चौहान

[28] कादम्बरीस्वीकरणसूत्रकारिका 126 वीं कारिका

10. चौहान, डॉ. दलवीर सिंह (सम्पादक एवं व्याख्याकार). कादम्बरीस्वीकरणसूत्रकारिका [राजर्षि भरत प्रणीत]. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, [द्वितीय संस्करण] 2023.
11. सातवलेकर, डॉ. श्रीपाद दामोदर(भाष्यकार). अथर्ववेद का सुबोध भाष्य (तृतीय भागे). पारडी : स्वाध्याय मण्डल, 1985.
12. दास, स्वामी रामसुखदास, (भाष्यकार तथा अनुवादक). श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुर: गीता प्रेस(नब्बेवाँ संस्करण)
13. कौशिक, अशोक (सम्पादक). श्रीमद्भगवद्गीता (हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद). नई दिल्ली: स्टार पब्लिकेशन्स, 1993, प्रथम संस्करण.
14. घोष, जगदीशचन्द्र एवं अनिलचन्द्र घोष (सम्पादक तथा अनुवादक). श्रीमद्भगवद्गीता. कलकता: प्रेसीडेंसी लाइब्रेरी, 1332 बंगाब्द.
15. शास्त्री, डॉ राकेश (सम्पादक एवं अनुवादक). मनुस्मृति (कुल्लुकभट्ट विरचित टीका सहित). दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन, 2005 प्रथम संस्करण.
16. Arya, Raviprakash and K.L Joshi (Edited). Ṛgveda Saṁhitā. Delhi: Parimal Publications, 2001 Second Edition.
17. मिश्र, राघवेन्द्र. कामशास्त्र का आध्यात्मिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अध्ययन. पीएचडी थीसिस, JNU, 2021.